ISBN : 978-81-8111-339-9

© : सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक : गोविन्द पचौरी
जवाहर पुस्तकालय
हिन्दी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक
सदर बाजार, मथुरा-281001 (उ. प्र.)
दूरभाष : 09897000951
ई-मेल : jawahar.pustakalaya@gmail.com
मूल्य : ₹ 250.00
प्रथम संस्करण : 2016
आवरण : गोविन्द पचौरी
शब्द-संयोजन : शालू कम्प्यूटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110032
फोन नं. 09313588569

प्राक्कथन

हमारा रहन-सहन, हमारा व्यवहार, हमारे आचार-विचार, हमारी बोलचाल, हमारा खानपान, हमारी आस्थाएँ जैसे कई क्रिया कलापों में हम जाने न जाने करते रहते हैं। जिन संस्कारों से प्रेरित होकर हम ये क्रियाएँ करते हैं, कुल मिलाकर संस्कृति कहलाती है। सभी लोग सुख की हामी हैं। लेकिन सुख है क्या? सुख मन की वह दशा है, जिसमें इसे संतोष मिलता है। सुख क्या है? सुख की प्राप्ति कैसे हो जाएगी जैसे कई सवालो का जवाब ढूँढ़ने का कार्य हमारे पुर्वजों ने किया था। जो हमारे पौराणिक ग्रंथों में समाहित है। भारत की धनी और प्राचीन संस्कृति की वजह से हमारा देश अन्य देशों के लिए प्रेरणा का स्रोत पौराणिक काल से ही रहा था। सिन्धु नदी के उद्‌भूत संस्कृति पर प्रकृति का प्रभाव पड़ना तो आम बात ही है। अपने बुद्धि के परे जो बातें हो रहे हैं, उसको सिन्धु तट वाले 'परमात्मा' कहकर पुकारी।प्रकृति भी उसके लिए परमात्मा था। उनके सुख और समृद्धि का आधार था।

आज सबसे ज्यादा भरोसा जिस पर से उठने लगा है वह है, आदमी। पहले तो आदमी नीयत का जितना साफ-सुथरा, सहज और शुद्ध-बुद्ध होता था, जो करता था, वही कहता था। इन दोनों ही प्रकार के कर्म व अभिव्यक्ति में न किसी प्रकार की कोई मिलावट थी, न कोई अन्तर।

हृदय से लेकर वाणी और आँखों तक एक ही धारा का समत्व भरा प्रवाह ही इस बात का संकेत होता था कि जो शब्द उसके मुँह से उच्चारित हो रहे हैं वे मात्र कंठ की उपज नहीं हैं बल्कि हृदय के भीतर से आ रहे हैं।

डॉ. रंजित एम.

प्रकाशित कृतियाँ–

1. अज्ञेय के तार सप्तक
2. हिन्दी सूफी काव्यों में समाज दर्शन
3. हिन्दी कथा साहित्य में बाल पात्र
4. अनार अब भी फूलते है। भाषा समन्वय वेदी कालिकट से अनुवाद पुरस्कार प्राप्त रचना।
5. हिन्दी सूफी साहित्य में प्रकृति वर्णन

हिन्दी सूफी साहित्य में प्रकृति वर्णन

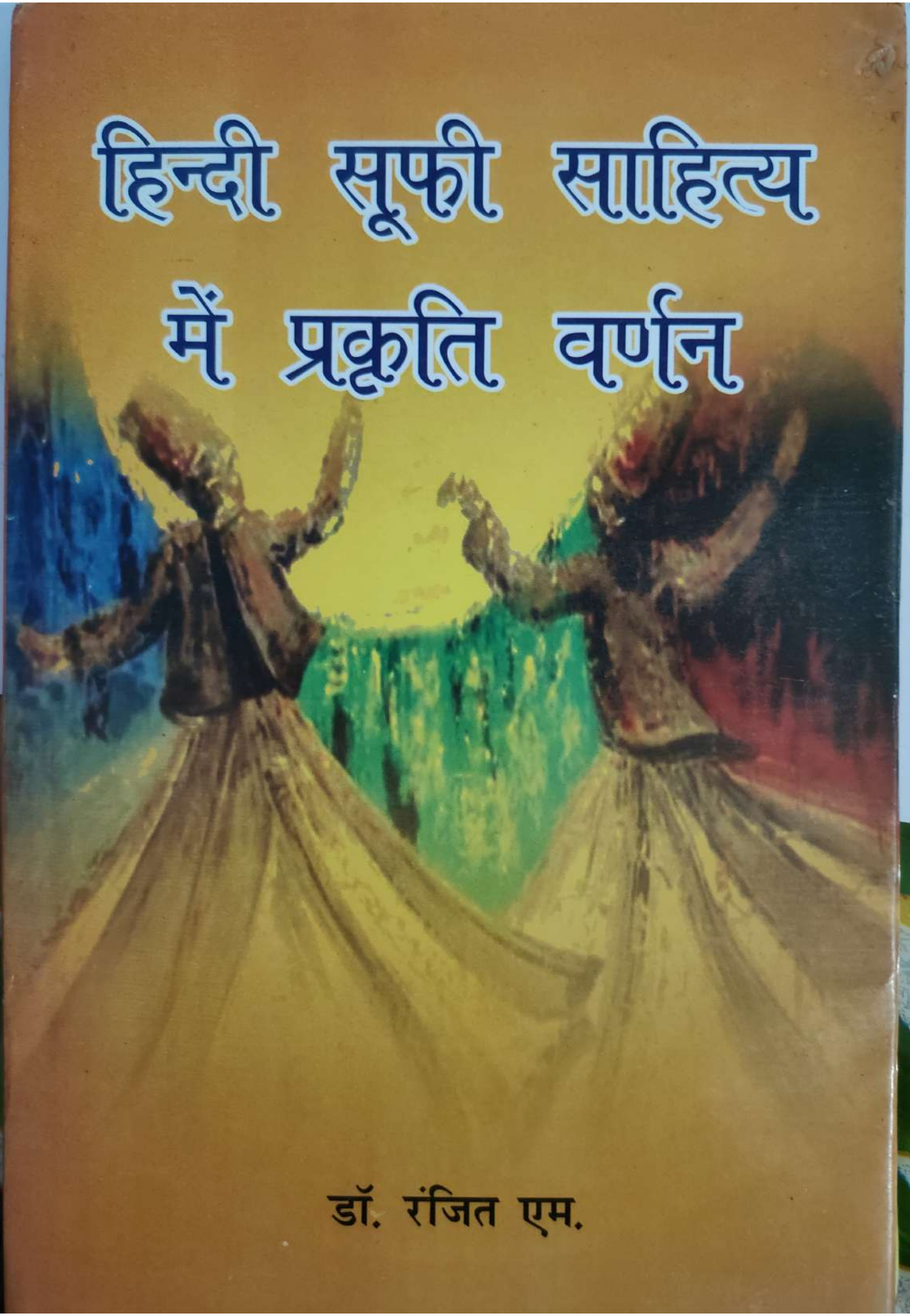

डॉ. रंजित एम.